बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सुब्हान क ला इलाह इल्लल्लाहु सुल्तान क या मन हुवल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल अ हदुस्स म दु लम यलिद व लमयूलद व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अ ह दुन सल्लि व सल्लिम व बारिक सर्मदन अला नूरिकल हबीबिल अ ह दिस्स म दिल्लज़ी अदख़ल्त नूरहू फ़ी ज स दि आद म फ़क़र्र र रूह हू व अ़ल्लम त आदमल अस्मा अ कुल्लहा सुम्म अ़ र द़ हुम अ़लल मलाइकति व कुल्त या आदमु अम्बिअहुम बिअस्माइहिम फ़लम्मा अम्बअहुम बिअस्माइहिम बि ब र कति नूरिकल महब्बति फ़हय्यरू फ़कुल्त फ़िल फ़ुर्क़ानिल हमीदि क़ालू सुब्हान क लाइ़ल्मलना इल्ला माअ़ल्लम्तना इन्न क अन्तल अ़लीमुल्हकीमु व फ़द्वल्तहू बिही अ़लैहिम फ़कुल्त फ़िल्कुर्आनि व इज़्कुल्ना लिल्मलाइकतिस्जुदू लि आद म फ़ स ज दू इल्ला इब्ली स अबा वस्तक्ब र व का न मि नल काफ़िरी न व नूरिकल्लज़ी जअ़ल्त वालिदैहि अश रफ़ल वालिदी न व आलहू अश रफ़ल आलि व अस्हाबहू अश रफ़ल अस्हाबि व उम्म तहू अश रफ़ल उममि व हु व नूरुकल हबीबुल अ हदुस्स म दु मोहम्मदुर्रसू लुल्लाहि व अ़ला वालिदैहि व आलिही व अहलि बैतिही व अस्हाबिही बिकुल्लि शअनिन जदीदिन इला अ बदिल आबादि।

तर्जमाः अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। पाकी है तेरी नहीं कोई मअ़बूद सिवाए अल्लाह के बादशाहत है तेरी ऐ वह जो अल्लाह है नहीं कोई मअ़बूद सिवाए उस के जो यक्ता है बेनियाज़ है वह किसी से पैदा नहीं उस की कोई औलाद नहीं और उसका कोई हम्सर नहीं तू भेज ख़ूब ख़ूब सरमदी दुरूदो सलाम और बरकत अपने उस यक्ता बेनियाज़ नूरे हबीब पर कि जिनके नूर को तूने सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम के जिस्म में दाख़िल फ़रमाया तो उन्की रूह को क़रार हासिल हुवा और तूने सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम को तमाम अस्मा सिखाए फिर उन्हें मलाइका पर पेश किया और तूने फ़रमाया ऐ आदम तुम इन्हें इन्के नाम बताओ पस जब आदम ने उन्हें उन (अश्या) के नाम तेरे नूरे मोहब्बत की बरकत से बताए तो वह हैरत ज़दह हो गए चुनान्चे तू फ़ुर्क़ाने हमीद में फ़रमाता है "वह बोले पाकी है तेरी हमें कुछ इ़ल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया बेशक तूही इ़ल्मो हिक्मत वाला है" और तूने सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम को उस नूर की बरकत से तमाम फ़िरिश्तों पर फ़ज़ीलत बख़्शी चुनान्चे तू कुर्आन में फ़रमाता है "और याद करो जब हमने फ़िरिश्तों से कहा कि तुम सब आदम को सिज्दा करो तो सब ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के कि वह मुन्किर हुवा और ग़ुरूर किया और काफ़िर होगया" और अपने उस नूर पर कि बनाया तूने जिन के वालिदैन को तमाम वालिदैन में सबसे ज़्यादा शराफ़त वाला और उन की आल को तमाम आल में सबसे ज़्यादा शराफ़त वाला और उन के अस्हाब को तमाम अस्हाब में सबसे ज़्यादा शराफ़त वाला और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों में सबसे ज़्यादा शराफ़त वाला और वह तेरे यक्ता बेनियाज़ नूरे हबीब मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और आप ﷺ के वालिदैन पर, आप ﷺ की आल पर आप ﷺ की अहले बैत पर और आप ﷺ के अस्हाब पर हर नई शान के साथ हमेशगी तौर पर।

नोटः जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना ४०/७/३ बार पढ़ने का अपना मअ़मूल बनाएगा वह आ़लमे मल्कूत का फ़ैज़ पाएगा और जुम्ला अफ़आ़ले शैतानी से महफ़ूज़ हो जाएगा और उस की हर दुआ़ क़बूल होगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।